SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III
Paper-V
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
V.K.S.U. Ara

KINDS OF LEADERSHIP
नेतृत्व के प्रकार

समाज मनोविज्ञान में नेतृत्व का अध्ययन एक विशेष महत्व रखता है। प्राचीन काल से ही समाजशास्त्रियों के लिये यह एक रुचिकर विषय रहा है। नेता को परिभाषित करते हुए क्रेच एवं क्रचफिल्ड (1982) ने कहा है:-

"नेता समूह के वैसे सदस्य होते हैं जो समूह की क्रियाओं को प्रभावित करते हैं।"

जहाँ तक नेता के प्रकार या नेतृत्व के प्रकार का प्रश्न है तो इससे Leadership Style (नेतृत्व शैली) का बोध होता है। इस संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व के प्रकार को निम्नलिखित चार आधार पर वर्गीकृत करने का प्रयास किया है:-

(1.) नेतृत्व की उत्पत्ति के आधार पर।
(2.) नेतृत्व के उद्देश्य के आधार पर।
(3) नेतृत्व की प्रकृति के आधार पर।
(4) अनुगामियों के साथ नेता के सम्पर्क की प्रकृति के आधार पर।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों में काफी मतभिन्नता है। Kimbal young ने तो अपनी पुस्तक "THE Handbook of Social Psychology" में नेता के सात प्रकार बताये हैं। हम यहाँ इस पचड़े में न पड़कर नेता को मूलतः दो श्रेणियों में विभक्त कर अध्ययन करेंगे:-

(A) सत्तावादी नेता (Authoritarian leader)

(B) प्रजातांत्रिक नेता (Democratic leader)

इस संदर्भ में कर्टलेविन और उनके अनुयायियों द्वारा किया गया अध्ययन

अधिक सराहनीय है। व्हाईट लेविन एवं उनके साथियों ने कुछ अध्ययन किया तथा लिप्पिट एवं व्हाईट ने इन अध्ययनों का एक सारांश (Summary) तैयार की जिसके आधार पर दोनों प्रकार के नेतृत्व के स्वरूप को आसानी से समझा जा सकता है।

Ⓐ सत्तावादी नेता (Authoritarian leader) :- सत्तावादी नेता अपने समूह का सर्वेसर्वा होता है और शक्ति को अपने हाथों में केन्द्रित रखता है। उनकी प्रवृत्ति अधिनायकवादी की तरह होती है। अतः उन्हें अधिनायकवादी भी कहा जाता है। सत्तावादी नेता स्वयं कार्ययोजनाएँ बनाता है तथा कार्यान्वित करता है। सदस्यों के बीच कार्यों का बँटवारा मनमानी ढंग से करता है। शक्ति का केन्द्रबिन्दु वह स्वयं होता है। जैसे वर्तमान में इसका सबसे अच्छा उदाहरण उत्तर कोरिया के राष्ट्रपति किम जुंग हैं। ऐसे नेता Task oriented होते हैं। सदस्यों की कल्याण की चिन्ता कम या नहीं करते हैं।

Ⓑ प्रजातांत्रिक नेता (Democretic leader) :- प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली में Democretic leader को अधिक लोकप्रियता प्राप्त होती है। ये सत्ता तथा कार्य का बँटवारा सदस्यों की योग्यता के अनुसार कर देते हैं। यानी सत्ता का विकेन्द्रीकरण में विश्वास रखते हैं। सदस्यों की राय एवं सलाह से योजनाएँ बनाते हैं, तथा कार्यान्वित करते हैं। इनके समूह का मनोबल काफी ऊँचा होता है। इनके मरने के बाद सत्ता का हस्तांतरण आसानी से दूसरे योग्य एवं श्रेष्ठ तथा सर्वमान्य व्यक्ति में हो जाता है।

सत्तावादी तथा प्रजातांत्रिक नेतृत्व में अन्तर :-

स्मरणीय बात यह है कि सत्तावादी एवं प्रजातांत्रिक नेतृत्व के बीच कार्य, अधिकार एवं शक्ति में काफी हद तक समानताएँ हैं। अन्तर मूलतः दोनों के अधिकारों तथा कार्यों को कार्यान्वित करने की विधियों या तरीकाओं में है। इस संदर्भ में लिप्पिट तथा व्हाईट (1938) तथा न्युकम्ब एवं हार्टले (1958) के अध्ययनों के आधार में दोनों प्रकार के leadership में निम्नलिखित प्रकार से अन्तर किया जा सकता है :—

(1) सत्तावादी नेता तथा प्रजातांत्रिक नेता में तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि सत्तावादी नेतृत्व में कार्यों का केन्द्रीकरण (Centralization of work) पाया जाता है। नेता अपने समूह की लक्ष्य का निर्धारण स्वयं करता है। इसको प्राप्त करने के तरीकों का चयन स्वयं करता है। सदस्यों को इसकी जानकारी नहीं रहती है।

दूसरी तरफ Democretic leader कार्यों एवं अधिकारों का विकेन्द्रीकरण (Decentralization) करता है। समूह के सदस्यों के साथ मिलकर लक्ष्य बनाता है। सभी सदस्यों को group goal उसको एवं प्राप्त करने के साधनों की जानकारी होती है।

(2) सत्तावादी नेता सर्वशक्तिमान होता है। समूह के अन्दर Absolute Power (निरंकुश अधिकार) उसके हाथ में होता है। जबकि प्रजातांत्रिक नेता में Relative Power (सापेक्ष शक्ति) होता है। वह समूह के सदस्यों से राय लेकर कार्य करता है।

(3) सत्तावादी नेतृत्व में नेता अधिक आक्रामक होता है जो भी सदस्य उसके मर्जी के खिलाफ काम करते हैं, उन्हें वह सीधे दंडित कर देता है। दण्ड के औचित्य के बारे में नेता से पूछताछ करने में लोग डरते हैं। प्रजातांत्रिक नेता आक्रामक प्रवृत्ति के नहीं होता है। प्रजातांत्रिक नेता भी सदस्यों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई करता है, पर उन्हें अमानवीय ढंग से दण्डित नहीं कर सकता।

(4) प्रजातांत्रिक नेतृत्व स्नेह एवं भ्रातृत्व की भावना अधिक पाई जाती है, जबकि Authoritarian शासन प्रणाली में में विनित भाव पाया जाता है।

(5) सत्ताधारी नेतृत्व में तनावपूर्ण वातावरण अधिक पाई जाती है, जबकि Democratic Leadership में शांतिपूर्ण वातावरण पाया जाता है।

(6) सत्ताधारी नेतृत्व मे "I" feeling पाई जाती है जबकि प्रजातांत्रिक नेतृत्व में "We feeling" पाई जाती है।

(7.) सत्ताधारी नेतृत्व में समूह के अन्तर्गत कई उपसमूह पाये जाते हैं। नेता समूह को कई छोटे-छोटे उपसमूहों में बाँटकर

रखता है ताकि बगावत न हो सके। इससे सदस्य एक जगह इकट्ठा नहीं हो पाते हैं, दूसरी तरफ प्रजातांत्रिक नेतृत्व में सदस्य एकत्रित होकर मिलजुलकर निर्णय लेते हैं। इससे सदस्यों की मनोवृत्ति अनुकूल होती है। एकजुटता बनी रहती है।

(8.) संकट की घड़ी में प्रजातांत्रिक नेतृत्व में सभी सदस्य मिलकर डटकर सामना करते हैं, जबकि सत्तावादी नेतृत्व में इसका जवाबदेह नेता को ठहराते हैं। मिलकर सामना नहीं करते हैं।

(9) सत्ताधारी नेतृत्व में प्रभुत्व की प्रबलता होती है। नेता को सदस्य भगवान (Lord) की तरह देखते हैं। दूसरी तरफ प्रजातांत्रिक नेतृत्व में सौहार्द्र की भावना होती है। नेता को अपनों के बीच का आदमी मानते हैं।

(10) सत्तावादी नेता अधिक स्वार्थी होता है। उसे दल की भलाई से खास मतलब नहीं होता। प्रजातांत्रिक नेता को दल की भलाई की चिंता अधिक होती है। वह अपने सदस्यों की कल्याण के लिए जान की बाजी लगा देता है।

(11) सत्तावादी नेतृत्व में सदस्यों में सामाजिक दूरी अधिक होती है। वे आपस में कम ही मिल पाते हैं। सदस्य नेता से सीधे बातें नहीं कर सकते। प्रजातांत्रिक नेतृत्व में सदस्य नेता से सीधे मिल सकते हैं। अपनी विचार एवं शिकायत से अवगत करा सकते हैं। सत्तावादी नेता तक बातें उसके सिपहसलार द्वारा ही पहुँच सकता है।

(12) सत्तावादी नेता की मृत्यु अथवा अनुपस्थित रहने पर दल में विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। प्रजातांत्रिक नेतृत्व में ऐसी स्थिति आने पर संगठन मजबूती एवं चट्टानी एकता से कायम रहती है।

(13) सत्तावादी नेतृत्व में Group Moral नीचे रहता है परन्तु प्रजातांत्रिक नेतृत्व में Group Moral ऊँचा रहता है।

(14) सत्ताधारी नेता पर समूह के सदस्य आश्रित रहते हैं जिसके कारण उनकी अनुपस्थिति में कार्य रुक जाता है, लेकिन प्रजातांत्रिक नेतृत्व में समूह के सदस्य नेता पर आश्रित नहीं होते हैं। इसीलिए उनके अनुपस्थिति में समूह का कार्य सुचारु रूप से चलते रहता है।

(15) सत्ताधारी नेतृत्व में कोई भी सदस्य अपनी इच्छा से कोई छोटा काम भी नहीं कर सकता है। जबकि प्रजातांत्रिक नेतृत्व में ऐसी रुकावटें नहीं होती हैं।

(16) सत्ताधारी नेता अपने समूह का Foundation Stone होता है। उसके अभाव में समूह बिखर जाता है। प्रजातांत्रिक नेता समूह का Foundation Stone नहीं होता है। उसके अभाव में दूसरा व्यक्ति कार्यभार संभाल लेता है।

(17) सत्ताधारी नेता सदस्यों के भाग्य का निर्धारण स्वयं करता है। उन्हें अपने इच्छानुसार कार्य का विभाजन करता है। जबकि प्रजातांत्रिक नेता सदस्यों की राय से उनके योग्यतानुसार कार्य का बँटवारा करता है।

(18) राज परिवार के बच्चों ने Authoritarian leadership को पसंद किया जबकि साधारण परिवार के बच्चों ने Democratic leadership को पसंद किया।

(19) सामान्यतः सत्तावादी नेतृत्व में समूह की प्रभावशीलता सीमित होती है। सदस्यों में संतुष्टि का अभाव होता है जिससे समूह की उत्पादकता घट जाती है। दूसरी तरफ प्रजातांत्रिक नेतृत्व में सदस्यों में संतुष्टि अधिक होती है। फलतः समूह की Productivity नेता के रहने या न रहने पर भी सामान्य स्तर पर बनी रहती है। सत्तावादी नेता के मौजूदगी में Productivity डर के कारण बढ़ जाती है लेकिन अनुपस्थित रहने पर घट जाती है।

(20) सत्तावादी नेता प्रायः तानाशाह होता है। वह Divide and rule की Policy में विश्वास रखता है। प्रजातांत्रिक नेता अपने समूह का Agent होता है।

इस प्रकार देखते हैं कि नेतृत्व के कई प्रकार होते हैं, जिनमें सत्तावादी एवं प्रजातांत्रिक नेतृत्व को अधिक महत्व प्राप्त है। दोनों में कौन सी नेतृत्व प्रणाली उपयोगी एवं श्रेष्ठ है। इसका निर्धारण समय, परिस्थिति, देश एवं काल के आधार पर करना ही उचित होगा। इस संदर्भ में बी॰ कुप्पुस्वामी का कहना है कि जब देश कठिन परिस्थिति

से गुजर रहा होता है, या साम्यवादी देशों या राज परिवार के सदस्यों एवं सेना तथा शिक्षक के लिए सत्तावादी नेतृत्व शैली का होना लाभदायक होता है, क्योंकि अनुशासन बना रहता है। जबकि शांति काल, एवं अन्य हालात में प्रजातांत्रिक शासन शैली श्रेष्ठ होती है। अधिकांश स्थिति में प्रजातांत्रिक नेतृत्व ही कल्याणकारी होता है।

[illegible]
02.9.2024